Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VI, Issue XI,July - 2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

शिवानी के उपन्यास–साहित्य में संवेदना

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VI, Issue XI, July - 2013, ISSN 2230-7540

शिवानी के उपन्यास–साहित्य में संवेदना

Seema Narwal

Assistant Professor in Hindi, Gaur College of Education, Hisar

---------------------------♦-----------------------------

संवेदना की अवधारणा :

साहित्य का संबंध मूलतः मानव–हृदय से है। वह रचनाकार के हृदय से निकलकर आस्वादक के हृदय तक पहुँचता है। हृदय से हृदय तक की इस यात्रा में मुख्य भूमिका है संवेदना की।

पुरातन काल से लेकर आज तक यह सम्पूर्ण समाज जिस आधार पर टिका हुआ है, वह संवेदना ही है। बिना इस अनिवार्य मूलाधार के समाज उस तरह सुगठित नहीं हो सकता था जैसा कि है या मूल बिन्दु अर्थात् अपने स्वरूप के पश्चात् जिस स्वरूप में रूपान्तरित या पर्यवसित हुआ। दूसरी ओर महत्वपूर्ण बात यह भी कि बिना इस अनिवार्य मूलाधार के यह समाज शायद मानवीय जैसा विशेषण भी ग्रहण न कर सकता।

साहनी के शब्दों में ''रचना, लेखक की कलम नहीं करती, उसका मस्तिष्क नहीं करता, उसका भाव–विह्वल हृदय करता है।''

साहित्य की यही सार्थकता है कि वह हमारे संवेदना का विस्तार करता है। एक क्षण भी हमारे अस्तित्व का ऐसा नहीं जब हमारी इन्द्रियाँ मन और बुद्धि किसी न किसी संवेदन की गिर तू में नहीं आती, यही संवेदना साहित्य सृजन का मूलाधार हैं।

संवेदना–हीन साहित्य का कोई मूल्य नहीं चाहें उसमें बुद्धिवाद का कितना ही ऊहापोह क्यों न हो, दर्शन की नई–नई भंगिमा क्यों न हो, बुद्धि, दर्शन, चिंतन, ज्ञान, विज्ञान सबको पहले जीवन में आत्मसात होना पड़ता है। आत्मसात होकर मानव–संवेदन का अंग बनना पड़ता है, तभी साहित्य में सत्यम्–शिवम् और सुन्दरम् की भावना प्रस्फुटित हो सकती है।

संवेदनशील कलाकार जीवन की चुनी हुई घटनाओं को लेकर भाषिक संरचना द्वारा अभिनव कला–सृष्टियाँ करता है क्योंकि ''प्रेम के बाद संवेदना ही मानव के अंतरतम की सर्वाधिक पवित्र भावना है, सहनुभूति के दो शब्द किसी के दुःख कष्ट का निवारण भले ही न कर सके, उसके दिल को तस्सली तो दे ही सकते हैं। दुःखी मनुष्य जब किसी पर पड़े दुःख को देखता है जो उसका हृदय अधिक भाव–विह्वल नयन अधिक अश्रुमंडित तथा मुखाकृति और अधिक करूणा विह्वलित हो उठती है। निश्चय ही संवेदना हमें आत्मीयता के प्रगाढ़ बंधन में बाँधती हैं। यह हमें कोमल अनुभूतियों के उस 'भावलोक' में ले जाती है, जहाँ कृतज्ञता की मौन स्वीकृति है, रागात्मक उष्मा का भाषा–रहित संम्प्रेषण है और निनादित होते हुए प्राणों का दिव्य संगीत है। यदि संवेदना न हो तो मनुष्य पाषाण हो जाये। दूसरों के सुख–दुःख को कोमलता से महसूस करने वाला हृदय ही न रहा तो मनुष्य के पास मनुष्य के लिए बचेगा क्या।''

साहित्य मात्र का संबंध मानव–हृदय से है। मानव–हृदय से जुड़ी रचना किसी साहित्यिक आन्दोलन का सहारा लिए बिना ही सफल होती है और कालातीत होती है। वाल्मीकि की 'रामायण' किसी आंदोलन की फलश्रुति नहीं है। वह तो क्रौंचवध की वेदना से द्रवित हृदय की संवेदना ही 'रामायण' के रूप में निसृत हुई है। निषाद का आतिथ्य स्वीकारते राम किसी राजनीतिक आन्दोलन के राम नहीं थे, और वन में परित्यक्त सीता किसी 'आँसूढार लेखनी' की ऊपज नहीं थी। 'वाल्मीकि रामायण' पर शायद उस युग में किसी चर्चा का आयोजन भी नहीं हुआ होगा, परन्तु आज भी वह कृति जीवित है, क्योंकि वह सम्पूर्ण रूप से मानवीय संवेदना की कथा है।

संवेदना का अर्थ :

संवेदना 'संस्कृत का शब्द है। जिसका अर्थ है 'सुख–दुःख का अनुभव या ज्ञान या प्रतीति। 'संवेदन' शब्द पुल्लिंग है। इसमें 'आ' प्रत्यय लगने से उसका स्त्रीलिंग रूप संवेदना बना है। विभिन्न विद्वानों ने संवेदना का अर्थ स्पष्ट करने की कोशिश की है।

संवेदना शब्द की व्युत्पत्ति ''वेदना'' शब्द के पूर्व ''सम्'' उपसर्ग लगा देने से होती है। यह वेदना शब्द विद् धातु से बनता है। संस्कृत भाषा में इस विद् धातु का अर्थ पीड़ा या संता पके अतिरिक्त प्रमुख रूप से ज्ञान से होता है। विद् धातु में 'ध ् , ल्युट और टाप् प्रत्यय लगा देने से वेदना शब्द बनता है।

विद् + ध् + ल्युट् + टाप् = वेदना

इस वेदना शब्द के पूर्व सम् उपसर्ग लगाने से संवेदना शब्द बनता है।

सम् का अर्थ होता है – सम्यक् रूप से, समान रूप से अथवा प्रत्यक्ष रूप से। जिस रूप में है, उस रूप से। इस प्रकार संवेदना का व्युत्पतिपरक अर्थ पीड़ा या ज्ञान की उसके सम्यक् रूप से बोध करने से होता है।

अब हम आगे कुछ विद्वानो–द्वारा दिये गये अर्थ को स्पष्ट करेंगें।

''संवेदन शब्द में 'सम्' उपसर्ग है। सम् उपसर्ग जुड़ने पर संवेद, संवेदन और संवेदना शब्द बनते हैं। जिनका सामान्य अर्थ क्रमशः है अनुभव या वेदना, अनुभव या प्रतीति करना और सहानुभूति।''

''साधारणतः संवेदन या संवेदना शब्द का अर्थ होता है। अनुभव करना, सुख–दुःख आदि की प्रतीति करना, बोध, ज्ञान अथवा

www.ignited.in

अनुभूति। अनुभूत, ज्ञान या विदित होना अर्थात् शरीर में किसी प्रकार का वेदन होना। संवेदन शब्द के मूल में 'वेद' शब्द है। वेद से वेदन और संवेदन शब्द बने हैं। हिन्दी में यह शब्द प्रायः सहृदयता, सहानुभूति (सह–अनुभूति) के यथार्थ के रूप में ही प्रचलित हैं।''

''साहित्य में इस शब्द का प्रयोग इस सीमित अर्थ में नहीं किया गया है। विशेषतः जब हम मानवीय संवेदना की बात कहते हैं तो उसका आशय मात्र ज्ञानेन्द्रियों का अनुभव न रहकर मानव मन की अतल गहराईयों में छिपी करूणा, दया एवं सहानुभूति की उदात्त वृत्तियों तक हो जाता है। अपने व्यापक अर्थ में संवेदना 'अनुभूति' का भी व्यंजक है।''

''समग्रतः संवेदना का अर्थ हुआ – वस्तुबोध की प्रक्रिया में मस्तिष्क की विशिष्ट उत्तेजना की भाँति विह्वल हृदय से निःसृत विशिष्ट अर्थ–दृष्टि। किसी के प्रति उपजी करूणा या दुःख को देखकर स्वंय भी वैसा ही अनुभव करना संवेदना है। आधुनिक साहित्य संबा कोश (गुजराती) में उसे अंतःक्षेप 'सम–संवेदन' कहा गया है।'' भाषा, भाव और प्रेरणा तीनों ही प्रत्येक काल में संवेदना को नई अर्थवता प्रदान करते हैं। इसी तरह संवेदना का मूल अर्थ हुआ अनुभूति करना, सहृदयता, सहानुभूति, करूणा, सम–संवेदन रूप से अभिव्यक्त करना, इन्द्रियानुभव आदि संवेदना के अर्थ की पुष्टि करते हैं।

संवेदना का कोषगत अर्थ :

1) नालंदा विषाल शब्द सागर के अनुसार :

''(1) मन में होने वाला बोध या अनुभव अनुभूत और

(2) किसी को कष्ट में देखकर मन में होने वाला दुःख, सहानुभूति।''

2) हिन्दी–संस्कृत कोश के अनुसार :

''संवेदनम्, अनुभवः सुख–दुःखादि प्रतीति।''

3) गुजराती के बहुचर्चित ग्रंथ भगवदगोमंडल के अनुसार :

''संवेदन जानना अनुभवजन्यज्ञान, इंद्रियों के माध्यम से ज्ञान–जानकारी वहीं संवेदना–लगाव आंतर चेतना उर्मि।''

4) हिन्दी साहित्य कोष के अनुसार :

''साधारणतः संवेदना शब्द का प्रयोग सहानुभूति के अर्थ में होने लगा है। मूलतः वेदना या संवेदना का अर्थ ज्ञान या ज्ञानेन्द्रियों का अनुभव हैं। मनोविज्ञान में इसका यही अर्थ ग्रहण किया जाता है। उसके अनुसार संवेदना उत्तेजना के संबंध में देह–रचना की सर्वप्रथम सचेतन प्रक्रिया है, जिसमें हमें वातावरण की ज्ञानोपलब्धि होती है।''

5) मानविकी पारिभाषिक कोष के अनुसार :

''आजकल सामान्यतः इस शब्द का प्रयोग सहानुभूति के अर्थ में होने लगा है। साहित्य में इसका प्रयोग 'स्नायायिक संवेदनाओं की अपेक्षा मनोगत संवेदनाओं के लिए ही अधिक होता है। संवेदनाशील व्यक्ति दूसरे किसी व्यक्ति के सुख–दुःख को समझकर उससे अपना तादात्म्य स्थापित कर लेता है।''

अतः विभिन्न कोशगत अर्थ भी अनुभव, वेदना, सम–वेदना, अनुभूति, सुख–दुःख का तादात्म्य स्थापित करने की ही पुष्टि करते हैं।

संवेदनाः विभिन्न विद्वानों के मत :

संवेदना शब्छ को व्याख्यापित करने का प्रयत्न अनेक विद्वानों ने किया है, जिनमें से प्रमुख इस प्रकार है –

डॉ. रामदरश मिश्र ने संवेदना को इस प्रकार विश्लेषित किया है –

''मानवीय संवेदनाएँ सामान्यतः एक सी होती हुई भी वैशिष्टय धारण करती रहती हैं। संवेदना के इस वैशिष्टय का अपने आप में व्याख्येय नहीं हो सकता, वह अनुभव कराया जा सकता है और वह अनुभव जो कराया जा सकता है, विशिष्ट परिवेशों के माध्यम से।''

मुक्तिबोध ने संवेदना शब्द को इस प्रकार से समझाया है –

संवेदना एक आंतरिक तत्व है जिसमें भाव, संवेग, मनोवृत्तियाँ, प्रच्छवन विचारों और अवधारणाओं का संयमित आवेग रहता है।''

डॉ. देवीप्रसाद गुप्त ने संवेदना शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया है –

''साहित्यकार की चेतनानुभूति की उस मनोदशा या अवस्था को संवेदना कहते हैं जो उसे सृजन की प्रेरणा, रचना–विधान की क्षमता एवं लोकजीवन के प्रति आस्था प्रदान करती हैं।''

उपर्युक्त सभी विद्वानों के विचारों के आधार पर हम कह सकते हैं कि विचारों में मतैक्य नहीं है। समग्र रूप से कथा–साहित्य के संबंध में कहा जा सकता है कि इसमें मानव मात्र की आशाओं–निराशाओं, सुख–दुःख, अपेक्षाओं, मान–अपमानों, राग–द्वेष, हर्ष–शोक, प्रेम–घृणा, विस्मय, उत्साह, कुंठा आदि के साथ–साथ सामाजिक विषमता, रूढ़ियों, परम्पराओं में जकड़ा मजबूर मनुष्य और उसकी टूटती–बिखरती आशा, मध्यमवर्गीय तनाव, घुटन तथा अजनबीपन आदि की सोद्देश्य अनुभूति करा देना एवं मनुष्य को मनुष्यत्व की पहचान करा देना वास्तविक अर्थ में संवेदना है।

शिवानी हिन्दी की उन बड़ी कथाकरों में से हैं, जिन्होंने अपने पात्रों को बड़ी ममता और संवेदना से रचा है, और उन्हें करूणा का एक ऐसा अक्षयकोष सौंप दिया है कि वे हमें बार–बार मानवीय करूणा और विडम्बना की डबडबाई आँख के आगे ला खड़ा करते हैं। उनके पात्र अपनी संवेदना की अजस्त्र धारा में इस कदर बहा ले जाते हैं कि उनका कोई भी उपन्यास एक बार शुरू कर देने के बाद बीच में कहीं छोड़ देना असंभव है। हम मानो करूण नियति झेल रहे, उनके पात्रों के साथ–साथ ही थपेड़े खाते हुए, कथा के अंत तक पहुँचने के लिए विकल हो उठते हैं। यही शिवानी के उपन्यासों का जादूई सम्मोहन है, जो पाठकों की विभिन्न संवेदनाओं के द्वारा इस कदर बाँध लेता है कि शिवानी के उपन्यास पढ़ लेने के बाद बार–बार उनके उपन्यास तलाशने में जुट जाते हैं। आगे हम उनके उपन्यासों में पाई जाने वाली विभिन्न संवेदनाओं का उल्लेख करेंगें।

www.ignited.in

सहायक ग्रन्थ सूची

1. शिवानी के उपन्यासों का रचना विधान, शशिबाला पंजाबी, देवनागर प्रकाशन, जयपुर

2. शिवानी का हिन्दी साहित्य – सामाजिक परिप्रेक्ष्य में, डॉ. ज्योत्सना शर्मा, अन्नपूर्णा प्रकाशन, दिल्ली

3. शैली विज्ञान, भोलानाथ तिवारी, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली

4. स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी साहित्य, डॉ. बेचैन शर्मा, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली

5. स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यासों में राजनीति, डॉ. शन्नोदेवी अग्रवाल, ग्रंथायन सर्वोदयनगर, अलीगढ़

6. समसामयिक हिन्दी साहित्य, सं. हरिवंशराय बच्चन,

7. सतवें दशक के हिन्दी उपन्यास, डॉ. रमणाई डी. पटेल

8. स्मकालीन हिन्दी उपन्यास – कथ्य विश्लेषण, डॉ. प्रेम कुमार इंदु प्रकाशन, अलीगढ़

9. स्माज मनोविज्ञान, सुरजीतकौर, लखनऊ

10. संस्कृति के चार अध्याय, डॉ. रामधारी सिंह दिनकर, राजपाल एंड संस, दिल्ली

11. साहित्यालोचन, डॉ. श्यामसुन्दर दास, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद

12. साहित्यालोचन सिद्धांत, श्री प्रभुनाराण शर्मा, विनोद पुस्तक मंदिर, आग्रा

13. साहित्य का साथी, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी राष्ट्रभाषा, प्रचार समिति, वर्धा